SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन

शान्ति शर्मा, शोधार्थी, हिन्दी
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर मध्यप्रदेश, भारत
राजरानी शर्मा, (Ph.D.), से.नि. आचार्य, हिन्दी
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
शान्ति शर्मा, शोधार्थी, हिन्दी
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर मध्यप्रदेश, भारत
राजरानी शर्मा, (Ph.D.), से.नि. आचार्य, हिन्दी
शासकीय कमलाराजा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 09/12/2020
Revised on : -----
Accepted on : 16/12/2020
Plagiarism : 01% on 09/12/2020

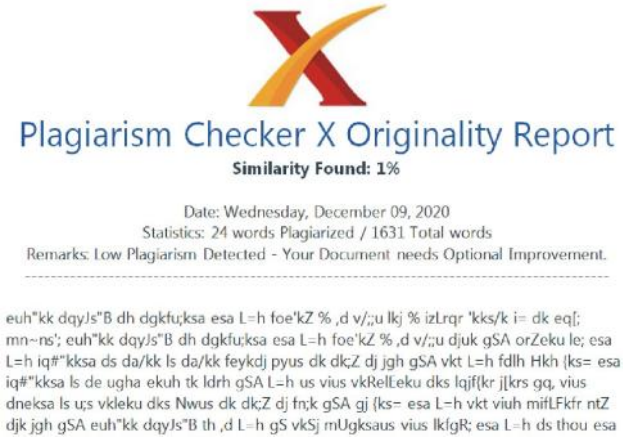
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

Date: Wednesday, December 09, 2020
Statistics: 24 words Plagiarized / 1631 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

euh"kk dqyJs"B dh dgkfu;ksa esa L=h foe'kZ % ,d v/;;u lkj % izLrqr 'kks/k i= dk eq[; mn~ns'; euh"kk dqyJs"B dh dgkfu;ksa esa L=h foe'kZ % ,d v/;;u djuk gSA orZeku le; esa L=h iq#"kksa ds da/kk ls da/kk feykdj pyus dk dk;Z dj jgh gSA vkt L=h fdlh Hkh {ks= esa iq#"kksa ls de ugha ekuh tk ldrh gSA L=h us vius vkRelEeku dks lqjf{kr j[krs gq, vius dneksa ls u;s vkleku dks Nwus dk dk;Z dj fn;k gSA gj {ks= esa L=h vkt viuh mifLFkfr ntZ djk jgh gSA euh"kk dqyJs"B th ,d L=h gS vkSj mUgksaus vius lkfgR; esa L=h ds thou esa

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री विमर्श : एक अध्ययन करना है। वर्तमान समय में स्त्री पुरुषों के कंधा से कंधा मिलाकर चलने का कार्य कर रही है। आज स्त्री किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं मानी जा सकती है। स्त्री ने अपने आत्मसम्मान को सुरक्षित रखते हुए अपने कदमों से नये आसमान को छूने का कार्य कर दिया है। हर क्षेत्र में स्त्री आज अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। मनीषा कुलश्रेष्ठ जी एक स्त्री है और उन्होंने अपने साहित्य में स्त्री के जीवन में आने वाली कठिनाइयों का बखूबी वर्णन किया है और वह स्त्री जीवन में आने वाली कठिनाइयों से स्त्री को उबारने का प्रयास भी बखूबी किया है।

मुख्य शब्द

स्त्री विमर्श, आत्मनिर्भर, स्त्री शिक्षा।

परिचय

मनीषा कुलश्रेष्ठ जी ने अपने कथा साहित्य के द्वारा स्त्री विमर्श और स्त्री के वर्तमान दौर में शिक्षित होकर पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर अपने आप को स्थापित कर आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनना दिखाया है वह आत्मनिर्भर होकर आज के आधुनिक परिवेश में अपने आप को स्थापित करने में लगी है।

नारी पर धर्म ने सदियों से अपना शिकंजा जकड़ा हुआ है। चाहे आज की नारी पढ़ी लिखी क्यों न हो परन्तु फिर भी उसका शोषण हो रहा है। खासकर विधवा नारियों के लिए तो धर्म ने उनका जीवन अभिशप्त बना दिया है। मनीषा कुलश्रेष्ठ जी ने अपनी कहानी 'रंग–रूप–रस–गंध' में विधवा स्त्री की विडम्बना को व्यक्त किया है। ज्यादातर स्त्रियां अपने विधवा होने को

अन्तिम चरण मान काशी में मृत्युपर्यन्त जीवन यापन करती है। अपना शेष जीवन विधवा रूप में काशी में ईश्वर के नाम पर समर्पित कर देती है। परन्तु विडम्बना तो यह है कि क्या काशी, क्या बनारस आदि हर जगह स्त्री का शोषण होता है। स्त्री चाहे जीर्ण–हीन स्थिति में जीवन व्यतीत करे या फिर महलों में, पुरुषों की कुत्सित नजरों का शिकार होने से नहीं बच सकती। बड़े–बड़े धर्म के पुरौंदा या पण्डितों, मौलवी आदि जो बड़े–बड़े बखान करते हैं, अवसर मिलने पर स्त्री का शोषण करते हैं। उनका चरित्र कीचड़ से सना पड़ा है।

व्यवस्था में फैली भ्रष्टता व अराजकता के कारण न केवल आदिवासी लड़कियों को अपितु समाज में बहुत–सी लड़कियों को यौन–शोषण का शिकार होना पड़ता है। यदि कोई स्त्री शिकायत करना चाहे या करें तो, उसे मरवा दिया जाता है या फिर पुलिस को खुश कर पीड़िता को और अधिक प्रताड़ित किया जाता है।

वर्तमान युग में स्त्री विचार–विमर्श का मुद्दा बनी हुई है। स्त्री सशक्तिकरण को लेकर अनेक योजनाएँ बनाई जा रही है। स्त्री को शिक्षा देने के साथ–साथ नौकरी के भी अवसर प्रदान किये जा रहे हैं, ताकि स्त्री स्वावलंबी बन प्रगति की ओर अग्रसर हो सके। शायद ही आज ऐसा कोई क्षेत्र होगा, यहाँ स्त्री न पहुँची हो। रिक्शा चलाने से लेकर हवाई जहाज चलाना, रसोईघर से लेकर सरकार चलाने तक, मजदूरी करने से लेकर प्रधानमंत्री बनने तक नारी ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवायी है। शिक्षा के जरिये स्त्रियों में चेतना आई है, परन्तु अब भी अधिकतर महिलाएँ अपने अधिकारों से वंचित है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ जी की रचनाओं में स्त्री मनोविज्ञान को बहुत ही प्रभावित ढंग से उकेरा गया है। एक ओर स्त्री के आधुनिक परिवेश को लेखिका ने अपना केन्द्र बिन्दु माना तो दूसरी ओर सामजिक यथार्थ से जूझती स्त्री, स्वावलम्बी स्त्रियों का वर्णन, परालम्बी स्त्रियों का अर्न्तद्वन्द्व तथा यौन शोषण का दर्द बखूबी प्रस्तुत किया है। समाज में रहकर किसी भी पात्र को आत्मसात कर अपनी रचना का रूप देकर लेखिका ने उपन्यास एवं कहानियों में जो कुछ भी रचा है, वह सराहनीय है।

स्त्री–विमर्श ने सदियों से चली आ रही स्वत्वहीनता, खामोशी को तोड़ा है तथा अपनी चुप्पी को गहरे मानवीय अर्थ दिए हैं। हाशियों की दुनिया को तोड़ा है। यही स्त्री–विमर्श की भूमिका है।

स्त्री का आत्मसंघर्ष प्रत्येक युग में विद्यमान रहा है। संघर्ष के आयाम पलते रहे हैं। कभी पारंपरिक रीति–रिवाज के नाम पर, कभी पुरुष की अह्म भावना के कारण, कभी पितृ सत्तात्मक, अधिकार भावना के कारण तो शिक्षित होने पर एवं आत्मनिर्भर होने के कारण इसे सदैव शोषित होना पड़ता है। अतः इसी के लिए मापदण्ड सीमित दिए गए हैं।

हिन्दी कहानी की दुनिया में जिन युवा लेखकों ने जोर से दस्तक दी है, उनमें मनीषा कुलश्रेष्ठ शामिल हैं। मनीषा जी ने अपने कथा साहित्य में स्त्री हर तरह की स्थिति, परिस्थिति का वर्णन किया है. किस प्रकार स्त्री सामाजिक आर्थिक, मानसिक एवं राजनैतिक पहलुओं शोषित होती चली है। पग–पग स्त्री के आत्मसम्मान, स्वाभिमान को चोटिल किया गया है।

स्त्री की मनोदशा को परखते हुए मनीषा जी ने अपनी कहानियों में उनको दुःख–दर्द, मरते स्वाभिमान, बेमेल विवाह, आर्थिक मजबूरी, आदि का चित्रण बड़े मार्मिक ढंग से किया है।

मनीषा जी की कहानी "कठपुतलियाँ" में स्त्री की आर्थिक मजबूरी, बेमेल विवाह, प्रेम का वर्णन किया। कठपुतलियों आम–जीवन के सुख–दुःख उसके टूटने को एवं स्त्री की दुखों को बहुत खूबसूरती और शिद्दत से अभिव्यक्त किया है।

रामकिशन एवं सुगना कहानी के मुख्य पात्र हैं। जीवन में आये उतार–चढ़ाव कैसे पूरी जिंदगी को बदल डालते हैं। और कैसे एक स्त्री को "कठपुतली" की भांति नचाते हैं।

सुगना की शादी जोगिंदर से तय होती है, मगर सुगना के पिता के गुजर जाने के बाद लेन–देन की बात पर यह रिश्ता टूट जाता है और सुगना की शादी रामकिशन (कठपुतली वाले) से हो जाती है। तेरह बरस की सुगना

और तीस बरस का रामकिशन जो विधुर और अपाहिज है और दो बच्चों का पिता है। यह बेमेल विवाह सुगना के जीवन में तूफान लेकर आता है।

स्त्री को स्वतंत्रता होने के लिए उसे सबसे पहले शिक्षित होना होगा और उसके उपरान्त स्वावलंबी बनना होगा। मनीषा कुलश्रेष्ठ 'स्यामीज' कहानी में स्त्री के अर्थ स्वतंत्रता की समर्थन करती है। क्योंकि जब तक स्त्री आर्थिक रूप से परतंत्र रहेगी तब तक उसको प्रताड़ित किया जाता रहेगा। ''नौकरी, आर्थिक सक्षमता ही एक परतंत्रता से निकलने का सबसे बड़ा माध्यम है। सिमोन ने कहा था 'पर्स की आजादी'।''

सभी कहानियों का अपने ढंग का वैविध्य और कथ्य है। विभिन्न परिस्थिति जीवन की स्थितियों उतार–चढ़ाव को लेकर बहुरंगी परिवेश और जीवन कड़वाहटों और सुख–दुःख को उजागर करती सभी कहानियों अपने ढंग में रंगी है।

"चुपकर रे... रामकिशना... ऑपरेशन के बाद कोई बच्चा होता है? अग्नि परीक्षा तो होने दे। हाथ में फफोले पड़ें तो इसके मायके वाले या इसके प्रेमी या तो इसे ले जाएं या चार हजार जुर्माना दें। सास ने रामकिशन को यूं धकियाया कि वह गिरते–गिरते बचा।

तो मंजूर है सगुना बाई?

सुगना ने उत्तर में तेल मले हाथ आगे कर दिये। एक पंच ने पान का एक–एक पत्ता उन नाजुक हथेलियों पर रखा और उन पर लाल, गरम ईंट रख दी गई। एक–दो–तीन... पूरे सात मिनट। आठवें मिनट पर पर ईंट जमीन पर फेंककर सुगना नीचे बैठकर उलटियाँ करने लगी। पान का पत्ता जलकर काला हो गया था। पास पड़ी पानी की बाल्टी में पांच मिनट डिबोकर हथेलियाँ ऊपर उठा दीं उसने। फफोले नहीं पड़े, पर हथेलियों पर रची मेंहदी की तरह लाल सुर्ख थीं।"

सुगना जैसी न जाने कितनी स्त्री इस त्रासदी भरी जिंदगी का बोझ आज भी ढो रही हैं। आज भी अग्नि परीक्षा स्त्री को ही क्यों देनी पड़ रही है। प्रेम, संवेदना, बेमेल विवाह पर आधारित यह कहानी स्त्री की मनोदशा का वर्णन करती है।

"कालिन्दी" कहानी में नारी के अस्तित्व की लड़ाई मौजूद है। जहाँ नारी अपनी अस्मिता का उद्‌बोध करना चाहती है। मूक बने रहने से काम नहीं चलता। जो हमारा नहीं उसके लिये रोना क्या? मध्यम वर्ग के लोग अपनी औरतों से इकलाएँ तीन मंजिला पीली इमारत में कस्टमर बनकर जाते थे, जहां अनैतिकता सिर खोले हुए घूमती थी। जीवन में यह साथ भौतिकवादी युग की देन नहीं बल्कि व्यक्ति की भी अपनी अलग सोच होती है। जो उस पर प्रभाव डाली है। फिर नारी का अपने बारे में सोचना सही और स्वाभाविक है।

मनीषा जी ने 'अवक्षेप' कहानी में शासकीय आदिवासी महिला छात्रावास में रहने वाली छात्रों की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। लेखिका इस कहानी में शासकीय व्यवस्था का मुखौटा उतारती है जो आदिवासी के नाम पर वोट बैंकिग मजबूत कर नेता अपना हित साधते हैं। दूसरी तरफ गर्ल्स हॉस्टल के अन्दर चल रही घिनौनी व्यवस्था का चेहरा भी उभर कर सामने आता है। हास्टल की मैट्रन हास्टल की लड़कियों से धंधा करवाने में पीछे नहीं हटती है। इस बात की पुष्टि 'अवक्षेप' कहानी की आदिवासी पात्र बेनु के माध्यम से होती है, ''पैले के दो महीने की छातरवर्ती इंचारज ने अटका रखी हैं पाँच सौ पूरे तो कभी देता ही नहीं। खा–पीके दो सौ टिकाता है, फेर भी चार सौ बनते हैं, मिलते ही दे दूँगी।''

''ऐसा क्यों करता है?''

, उसके बाप का राज है, नहीं करेगा अगर उसके बिस्तर पे कपड़े काढ़ के ... रॉड रा...'' रॉड रा...''

''पुलिस''

''वो हमारे यहाँ की दोनों कंजड़िनें हैं न, उनको ले जाके इंचारज पुलिस को खुश रखता है।''

निष्कर्ष

मनीषा जी प्रचलित कथाकारों में से एक हैं। इनकी कहानियों में विचारधारा और प्रतिबद्धता इस प्रकार विन्यस्त है कि कहानी का विन्यास विचारधारा और प्रतिबद्धता की आभा से ग्रस्त नहीं होता। मनीषा जी ने स्त्री को अग्रणी मानकर अपने उपन्यास तथा कहानियों में उनको केन्द्र में रखा है। मनीषा जी स्त्रियों के विषय में इतना गहन सोचती हैं कि लगता है कि जैसे उनका साहित्य स्त्रियों के लिए ही सृजित होता है। मनीषा कुलश्रेष्ठ समय, समाज और उसके विद्रूपों तथा चुनौतियों के प्रति भी सचेत रहती हैं। उनके द्वारा रचित कहानियाँ स्त्री अस्तित्व के पक्ष में हमेशा खड़ी हैं और उसके सामाजिक शोषण की भयावह परिणतियों पर भी संवेदनशील हैं।

आज के कथा परिदृश्य को देखा जाए तो एक बात सामने आती है कि नई पीढ़ी बहुरंगी और यातना परक है। आज भी स्त्री यातना परख जीवन–यापन कर रही है। मनीषा जी ने अपने कथा साहित्य में स्त्री की हर परिस्थिति का वर्णन हमारे सामने एक दर्पण की भांति किया है। फिर समस्या का प्रकार किसी भी प्रकार का हो। मनीषा जी नारी के सरल एवं लचीले स्वभाव की परतों को खोजने में अग्रणी रही।

संदर्भ सूची

1. कुलश्रेष्ठ, मनीषा, (2008), *कठपुतलियाँ,* भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
2. कुलश्रेष्ठ, मनीषा, *एक औरत के यकीन* – कविता कोष।
3. कुमार, राकेश, *नारीवादी–विमर्श*।
4. कुलश्रेष्ठ, मनीषा, *कुछ भी तो रूमानी नहीं,* अन्तिमा प्रकाशन, गाजियाबाद।

****